कविता और विज्ञान

जिस प्रकार आत्मा के बिना शरीर का और शरीर के बिना आत्मा का कोई अस्तित्व नहीं, उसी प्रकार कविता और विज्ञान भी एक दूसरे पर आवलम्बित हैं। दोनो एक दूसरे की पूरक शक्तियां हैं। अतः नैतिक, आध्यात्मिक, चारित्रिक उन्नति के लिए हृदय और बुद्धि की समानता आवश्यक है। भावुकता या ज्ञान की कोरी नीरसता मानव जाति का कल्याण नहीं कर सकती। मानव जाति के समुचित विकास के लिए त्याग, प्रेम, स्नेह आदि कोमल भावनाओं और हिंसा, बुद्धि की कठोरता में समन्वय होना आवश्यक है। समाज के सुहृदय और भावुक व्यक्तियों को आनन्दमयी एवं लोक हित कारणी भावनाओं की संचित निधि "कविता" है। इसके विपरीत समाज के तार्किक एवं बुद्धि प्रधान अन्वेषकों द्वारा खोजे हुए चमत्कारिक सत्यों का भण्डार ही " विज्ञान" है।

कविता मानव के दूषित संस्कारों को, हृदय के कलुषित भावों को एवं स्वार्थपूर्ण विचार धाराओं को समाप्त करके सात्विक भावों का सृजन करती है। मानव समाज का हृदय पक्ष, यानि कविता पक्ष, भावनाओं का प्रचार व प्रसार करता है जबकि बुद्धि पक्ष, यानि विज्ञान पक्ष, मानव जाति की भौतिक उन्नति एवं सभी सुख सुविधाओं को एकत्रित करने में सहायक है। आध्यात्मिक एवं भौतिक विकास के समन्वय से ही मानव कल्याण सम्भव है।

किन्तु खेद है कि आज का वैज्ञानिक चमत्कारी यान पर बैठकर ध्वसंकारी आविष्कार करता हुआ उड़ा जा रहा है। वह ईश्वर के अस्तित्व को मानव मन की दुर्बलता मानता है और भारतीय संस्कृति व सभ्यता का परिहास उड़ाने में गौरव का अनुभव करता है । वह प्रकृति से भयभीत न होकर उसे अपनी सहचरी समझता है। प्रकृति के पाँचों तत्व पृथ्वी, जल, वायु, अग्नि तथा आकाश पर उसका पूर्ण अधिकार है। चन्द्रमा एवं मंगलग्रहों पर नया संसार बसाने को आतुर है। चाहे संसार का विनाश क्यों न करना पड़े। यही कारण है कि मानव सभ्यता व संस्कृति विनाश के कगार पर पहुंच गई है। सम्पूर्ण मानवता भय से त्रस्त है। पृथ्वी पर भँवरों रुपी समस्याओं का जाल चारों ओर फैला हुआ है। आज बुद्धि-बुद्धि से, आदर्श आदर्श से और मूर्ति-मूर्ति से टकरा रहे हैं। चारों और विनाश व निराशा का वातावरण है। तर्कयुक्त मस्तिष्क ज्ञान के बल पर संसार को विभक्त करना चाहता है।

ऐसे वातावरण में करुणा, उत्साह, त्याग, प्रेम, मातृत्व, शक्ति, अहिंसा आदि कोमल भावनाओं के आधार पर ही नैतिक मूल्यों का विकास आत्मोत्सर्ग के बिना सम्भव नहीं। अतः विज्ञान के भय से अभय होने के लिए मानव के भौतिक उत्थान के साथ ही साथ उसके आध्यात्मिक ज्ञान का विकास होना भी आवश्यक है।

राकेश गोयल, तक. ग्रेड - ।।